भानु झा

भागलपुर

१

मुश्किलों से तो बाहर निकल देखेंगे
हम तो कीचड़ में खिलता कमल देखेंगे

कल की मुश्किल को हम यार कल देखेंगे
सामने है जो उसका ही हल देखेंगे

लाख रहते हों वो झोपड़ी में मगर
ख़्वाब में तो वो केवल महल देखेंगे

आपके सारे वादे तो वादे ही हैं
कितना होता है इन पर अमल,देखेंगे

पूरी रस्सी यहाँ जल गयी है मगर
इसमें कितना बचा है ये बल, देखेंगे

अपनी नेकी बदी* का यहाँ हम सभी
एक दिन तो यक़ीनन ही फल देखेंगे

२

गर झूठ बोलें, ईमान से जाते हैं
सच बोलने पर हम जान से जाते हैं

झुकते नहीं हैं तो काम बनता नहीं
गर झुकते हैं हम तो आन से जाते हैं

अपनी बनायी राहों पे तन्हा सही
हम जाते हैं पर इक शान से जाते हैं

दुनिया की सारी फिसलन भरी राहों पर
हम हर क़दम काफ़ी ध्यान से जाते हैं

उनकी अदा में तो कुछ न कुछ बात है
यूँ ही नहीं मजनूँ जान से जाते हैं